**International Journal of Hindi Research**
**www.hindijournal.com**
**ISSN: 2455-2232**
**Received: 01-09-2023, Accepted: 16-09-2023, Published: 02-10-2023**
**Volume 9, Issue 5, 2023, Page No. 38-40**

# महान् समाज सुधारकः संत कबीर

**Umashankar Ray**
Department of Hindi, Lalit Narayan Mithila University, Directorate of Distance Education, Darbhanga, Bihar, India

**सारांश**
संसार मे मानवीय मल्यो के महान प्रतिष्ठापक, समाजसुधारक के रूप में विख्यात संत काव्यधारा के प्रतिनिधि कवि कबीर का नाम हिन्दी साहित्य में बड़े आदर के साथ लिया जाता है। कबीर समाजसुधारक के साथ–साथ हिन्दी साहित्य के एक महान सामाजिक कवि थे जिन्होनें शताब्दियो की सीमा का उल्लंघन कर दीर्ध काल तक भारतीय जनता का पथ आलोकित किया आरै सच्चे अर्थो में मानव जन–जीवन का नायकत्त्व किया। उन्हाने सामाज में व्याप्त रूढ़ियो तथा अन्धविश्वासो पर करारा व्यंग किया है। उन्हाने धर्म का सम्बध सत्य आरै मानव कल्याण से जोड़कर समाज में व्याप्त रूढ़िवादी परंपरा का खंडन किया है। कबीर ने मानव जाति का सर्वश्रेष्ठ बताया है तथा अपने उपदेश मे यह भी बताया है कि सभी मानव एक समान है इन में से कार्ई भी उँचा या नीचा नहीं है। एक महान समाजसुधारक होने के कारण उन्हाने ने समाज में फैले अनेक कुरूतीयो और बुराईयों को दूर करने का पय्रास किया है। वे धार्मिक सहिष्णुता के पक्षधर कवि थे।

**मूल शब्दः** समाजसुधारक, अन्धविश्वास, यर्थाथ, स्वानुभूति, समतामूलक, साम्प्रदायिकता, परिकल्पणा, लाकेमगंल, परिश्रम, व्याप्त आदि।

हिन्दी साहित्य इतिहास के द्वितीय चरण को भक्ति काल कहा जाता है, इसे हिन्दी साहित्य का स्वर्ण युग भी कहा जाता है। भक्ति काल के निगुर्ण काव्यधारा के ज्ञानाश्रयी उपशाखा के प्रतिनिधि कवि संत कबीर है। कबीर का आविर्भाव 1398 इ0 में काशाी के लहरतारा तलाब के पास हुआ था। इनका पालन पाषण नीरू और नीमा नामक जुलाहे दम्पति ने किया। बड़े होने पर कबीर जुलाहे के काम के साथ–साथ साधुओं की संगति में बैठते थे। ये गृहस्थ थे। इनके पत्नी का नाम लाई था। कबीर के पुत्र का नाम कमाल व पुत्री का नाम कमाली था। कबीर सिकन्दर लेाधी के समकालीन थे। ये स्वामी रामानंद को अपना गुरू मानते थे। अक्षर ब्रह्म के परम साधक कबीर दास सामान्य अक्षर ज्ञान से रहित थे। उन्हानें बड़े स्पष्ट शब्दों में कहा हैः–

''मसि कागद छुयौ नही कलम गहयौ नही हाथ।''

कवि के रूप मे कबीर जीवन के अत्यतं निकट है। सहजता उनकी रचनाओं की सबसे बड़ी शाभा और कला की सबसे बड़ी विशेषता है। उनके काव्य का आधार स्वानुभूति या यथार्थ हैं। उन्हाने स्पष्ट रूप से कहा हैः–

''मैं कहता हूँ आँखियन देखी, तू कहता है कागद की लेखी।''

सन् 1518 ई0 में संत कबीर दास की मृत्यु हो गई। कबीर कवि होने से पहले एक समाजसुधारक थे, उन्हाने समाज में व्याप्त अन्धविश्वास, पाखण्ड, मूर्ति पूजा, छुआछुत तथा हिसां का व्यापक विरोध किया है। वे सभी इन्सान को एक ही ईश्वर को संतान मानते हैं। धर्म के नाम पर हिन्दू–मुस्लिम की बढ़ती खाई को पाटने का काम सबसे पहले संत कबीर दास ने ही किया था। उन्होने धर्म के नाम पर होने वाले दंगो का पुरजोर खण्डण किया है, तथा परमात्मा का निवास स्थान जीवात्मा के हृदय में ही बताया है।

''कस्तूरी कुण्डली बसै, मृग ढुढे बन माहि।
एसै घटि–घटि राम है, दुनियाँ देखे माहि।''

जिस तरह हिरण कस्तुरी के खुशबू को जंगल में ढ़ढूता फिरता है। जबकि कस्तूरी की वह सुगन्ध उसकी अपनी नाभी में हीं व्याप्त है। ठीक उसी प्रकार परमात्मा कण–कण में व्याप्त है परंतु मनुष्य उसे तीर्थो में ढ़ढूता फिरता है।

## मूर्ति पूजा का खण्डन

कबीर दास ने व्यांगात्मक तरीके से मूर्तिपूजा का खण्डन किया है।

''पाहन पूजे हरि मिलै, तो मैं पूजूं पहाड़।
घर की चाकी क्यो नाहिं पूजौं पीसी खाय संसार।''

कबीर कहते है कि अगर पत्थर की पूजा करने से भगवान मिलते तो मैं पहाड़ की पूजा कर लेता। उसकी जगह कोई घर की चक्की को क्यों नही पूजता जिसमें अनाज पीसकर सभी लागे अपना पेट भरते हैं।

## जाति–पाति का विरोध

कबीर ने जाति –पाति का विरोध किया है वे समाज मे व्याप्त वर्ण व्यवस्था तथा जाति–पाति के भदे–भाव को समाप्त कर समतामूलक समाज का निर्माण करना चाहते थे।

''जात पात पूछे न कोई,
हरि को भजै सो हरि का होई।''

कबीर दास जाती विभाजन का विरोध करते हैं वे कहते है कि परमात्मा की निगाह में कार्ई जात–पात नहीं होता हैं। सभी जीवात्मा परमात्मा का ही अंश है। जो सच्चे साधक के भाँती परमात्मा की भक्ति करता है, परमात्मा उसे आवश्य मिलते है।

## साम्प्रदायिकता का विरोध

साम्प्रदायिकता का अर्थ होता है किसी दूसरे के धर्म का नीचा दिखाकर खुद के धर्म का उँचा उठाना। कबीर ने धर्म के नाम पर लड़ने वाले हिन्दुओं और मुस्लमानों का विरोध किया है।

''सन्तों देखहु जग बरैाना।
हिन्दू कहे मौहि राम पियारा, तुरक कहे रहिमाणा।
आपस में दाऊे लरि–लरि गएुए मरम न काहू जाना।''

कबीर दास कहते है कि हिन्दू राम के भक्त है और मुसलमान को रहमान पसंद है। इस बात पर दानेा लड़कर मौत के मुँह में जा रह`है। परन्तु दोना`में से सच्चाई कोई नहीं जानता कि हम सब एक ही ईश्वर की सन्तान है।

**पाखण्डवाद का खण्डन**
कबीर दास ने समाज में फैले पाखण्डवाद का पुरजोर तरीके से खण्डन किया है।

''माला तिलक लगाई के, भक्ति न आई हाथ
दाढ़ी मूछं मुराय कैं, चलै दुनी के साथ
दाढ़ी मूछं मुराय कैं हुआ, घाटेम घाटे
मन को क्यों न मूरिये, जामें भरीया खोट।

कबीर दास उन लोगो पर व्यंग्य करते है जो एक तरफ माला जपते है तथा तिलक लगाते हैं। वहीं दूसरी तरफ कई तरह के अनैतिक कार्यो में संलग्न रहते है। माला, तिलक तथा दाढ़ी मुढ़ाने से कोई सच्चा साधक नहीं बन जाते। मनुष्य को अपने मन का मैल साफ कर समाज के भलाइ ंके लिए सदाचरण तथा सद्विचार को अपनाना चाहिए।

''काकंर पाथर जोंरि के, मस्जिद लई बनाए
त चढ़ि मुल्ला बागं दे, क्या बहिरा हुआ खुदाय।''

इस दोहे ंमें कबीर ने उस मुस्लिम समुदाय के लागें`का`पाखण्डी कहा है जो यह समझता है कि उसका खुदा बहरा है जारे से आवाज लगाने पर ही सुनता है ।

**लाकेमगंल की भावना**
कबीर दास समाज मे ंव्यापक सुधार लाने के लिए लोकमगंल की कामना करते हैं।

''कबीरा खड़ा बाजार में, मागें सब की खैर।
ना काहू सो दास्ती, न काहू सौ बैर।''

कबीर लाकेमगंल की कामना करते हुए यही चाहते है कि संसार में सब का कल्याण हो । संसार में यदि किसी से दास्ती नहीं तो दुश्मनी भी नहीं हो । उन्हाने मनुष्य को संकीर्ण विचारधारा को त्याग कर उच्च तथा आदर्श जीवन जीने का उपदेश दिया है।

**प्रेमतत्व की प्रधानता**
कबीर दास ने समाज में फैले आपसी बैर–भाव दुर करने के लिए प्रेम की प्रधानता पर जोड़ दिया है।

''पोथी पढ़–पढ़ जग मुआ पण्डित भया न कोय।
ढ़ाई आखर प्रेम का पढ़ै सो पण्डित हाये।

कबीर दास ने अपने उपदेश में बताया है कि बड़ी–बड़ी किताबे पढ़ने मात्र से ज्ञान नहीं हो जाता। वास्तविक ज्ञानी वहीं होता है जो प्राणी मात्र स`प्रेम करता हो ।

**परिश्रम की महत्ता**
कबीर दास परिश्रम के पक्षधर थे। वे परिश्रम करने वाले का`बहुत महान् समझते थे। परिश्रम द्वारा कबीर समाज में व्याप्त गरीबी को दुर करना चाहते थे।

''कबीर उद्यम अवगुण का`नही ं,जा`करि जाने काये।
उद्यम में आनन्द है, सांई सेती होय।''

कबीर दास के अनुसार परिश्रम में सफलता का आनन्द छिपा होता है। जा`मनुष्य परिश्रम करता है ईश्वर भी उसी का साथ देते है।

ज्ञान और कर्म की महानताः–

कबीर दास कहते है मानव ज्ञान और कर्म से ही महान् बनता है न कि जात–पात से।

''जाती न पूछो साधु की पूछ लीजिए ज्ञान।
मोल करो तलवार का पड़ा रहन दो म्यान।''

जिस पकार खुबसुरत म्यान में रखे सिर्फ तलवार का हीं मल्य होता है ठीक उसी प्रकार साधु के ज्ञान का महत्त्व हानेा चाहिए न की उसके जाती का।

विश्व परिवार की परिकल्पणाः–

सबसे पहले संत कबीर ने ही विश्व परिवार की परिकल्पणा की थी। वे संसार रूपी परिवार को विनम्रता का सन्देश देते हुए कुछ आवश्यक सुधार करना चाहते थे।

''शीलवन्त सबसे बड़ा, सर्व रतन की खानि
तीन लाके की सम्पदा, रही सील मे ंआनि।''

कबीर दास जगत कल्याण के उद्देश्य से संसार में आवश्यक सुधार के लिए सदैव विनम्रता और दया का ज्ञान देते है। विनम्रता एक एसी दौलत है, जिसके होने मात्र से आपका सम्मान कई गुणा बढ़ जाता है। चाह`आप धनहीन ही क्यों न हो परन्तु विनम्रता और दया आपको हमेशा महान् मानव की अग्रिम पंक्ति में खड़ा करके रखेगा।

**निष्कर्ष**
कबीर एक महान् संत, कवि और क्रांतिकारी समाजसुधारक थे। वे पुरे विश्व के सामाजिक बुराइयो को दुर कर एक नवीन समाज की स्थापना करना चाहते थे जहाँ लागे एक दूसरे से प्रेम करे। समाज में कबीर की सुधार भावना अपने क्रांतिपूर्ण रूप में अभिव्यक्त हुई है। संतो की अध्यात्मिक परंपरा में सामाजिक चतेना का एक विशेष स्थान होता है। इसलिए कबीर की सामाजिक चतेना का पुट बड़े विस्तार से दिखाई पड़ता है। रूढ़िवादिता जन्य सामाजिक विकारो ंका निदान कर समाज के नवीन स्वरूप के निर्माण का विधान संतो ने निरंतर किया है। उन संतो मे से सत कबीर का स्थान सर्वप्रमुख है। कबीर दास ने समाज के क्षत्रे में जो सबसे बड़ा कार्य करना चाहा था वह था साम्यवाद की स्थापना। कबीर समाज के क्षत्रे में ऊँच–नीच, ब्राह्मण, क्षत्रिय, शुद्र आदि की भदे भाव को सहन नहीं कर पाते थे। उन्होने इस भदे–भाव को आश्रय देने वालो की कड़ी निन्दा की है और दृढ़ता से उसकी निरर्थकता सिद्ध की है। इस सामाजिक चेतना स्वर में संत कबीर की वाणी उनकी आत्म संस्करण की धारणा का एक मूल्यवान स्वरूप ग्रहण करती है। इसलिए समाज के लिए कबीर की वाणी एक आदर्श शिक्षक के समान है।

## संदर्भ सूची


1. डॉ0 नागेन्द्र व डॉ0 हरदयाल, ''हिन्दी साहित्य का इतिहास ''पृष्ठ 118–120, 69वाँ संस्करण, 2019 मयूर बुक्स, नई दिल्ली–110002
2. हजारी प्रसाद द्विवेदी, 'कबीर' पृष्ठ–176 प्रथम संस्करण, 1942 प्रकाशक हिन्दी ग्रंथ रत्नाकर कार्यालय, बम्बई (हीरानगर)
3. वही पृष्ठ–216
4. डॉ0 एम0 फिरोज खान, नई सदी में कबीरए पृष्ठ 88, प्रथम संस्करण 2009 पकाशकः–आकाश पब्लिशर्स
5. एण्ड डिस्टीब्यूटर्स, उत्तराचल कॉलानी, लानी बार्डर गाजियाबाद–101663
6. वही पृष्ठ–87
7. वही पृष्ठ–71
8. विजयेन्द्र स्नातक, 'कबीर' प्रकाशकः राधाकृष्ण पकाशन नई दिल्ली–110002
9. प्रभाकर माचवे, 'कबीर' साहित्य अकादमी, नई दिल्ली–110002
10. आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, ''हिन्दी साहित्य का इतिहास, पृष्ठ 75–82 पकाशकः नागरी प्रचारिणी सभा काशी 10. डॉ0 माताप्रसाद गुप्त, ''कबीर गन्थावली'' प्रथम संस्करण, पकाशकः साहित्य भवन (प्रा0) लिमिटेड के0पी0 कक्कड़ राडे, इलाहाबाद–211003
11. श्यामसुन्दर दास, ''कबीर ग्रंथावली, प्रकाशकः इंडियन प्रेस, लिमिटेड प्रयाग
12. डॉ0 आशाके तिवारी ''हिन्दी पृष्ठ 48–49 प्रकाशकः साहित्य भवन, आगरो